Ganpati Gan Sadhana

।।गणपति गण साधना एवं सिद्धि।।

SHRI RAJ VERMA JI

Shri Raj Verma Ji
Contact- 09897507933, 07500292413

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

जिस प्रकार धनवान व्यक्ति की सेवा एवं कार्य आदि की पूर्ति के लिये उसके पास सेवक एवं सहायक आदि होते हैं उसी प्रकार प्रमुख देवताओं जैसे- गणपति, दुर्गा, शिव, विष्णु, काली, भैरव एवं इन्द्रादि के भी गण अथवा सेवक आदि होते हैं जो नित्य अपने स्वामी की सेवा पूजादि कर उन्हें प्रसन्न रखते हैं। प्रत्येक देवता की श्रेणी के अनुसार उनके गणों की संख्या होती है। शास्त्रों में काली, शिव, भैरव, विष्णु आदि के असंख्य गण कहे गये हैं। इन देवगणों में भी अपने स्वामी के प्रभाव से अनेक दिव्य शक्तियां एवं सिद्धियां विद्यमान रहती है जिसके माध्यम से मनुष्य लाभार्जित कर परमगति को प्राप्त कर सकता है। यहां पर गणेशजी के गण की साधना सिद्धि का विधान प्रस्तुत किया जा रहा है।

देवगण की सेवा उपासना से मनुष्य की सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में विशेष उन्नति होती है। साधक के शत्रु भी मित्र हो जाते हैं एवं अन्य कई प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त सबसे मुख्य लाभ देवगणों के माध्यम से देवी-देवताओं से सम्बन्धित दुर्लभ साधनाओं एवं क्रियाओं की प्राप्ति हो सकती है। सच्चे साधक को सांसारिक सिद्धियों के लिये नही अपितु आत्मकल्याण हेतु ही गणादि की सहायता लेनी चाहिये।

देवताओं की अपेक्षा उनके गण शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। जो जो गुण देवता के प्रभाव से उनके गणों में होते हैं सिद्धि पश्चात् वही सात्विक गुण मनुष्य में भी उदय होने लगते हैं। देवगण की कृपा से साधक में गणेशजी के प्रति अविचलित भक्ति उत्पन्न होती है एवं गणेश जी का विशेष सान्निध्य प्राप्त होता है। गण जो भी धनलाभ करावे उसका धार्मिक कार्यों में ही निर्वाह करते हुए सदैव सदाचार का पालन करना चाहिये। अन्यथा गण कुपित होकर धनादि नष्ट कर देते हैं। इस साधना में विशिष्ट साधक या गुरु का मार्गदर्शन अत्यावश्यक है।

साधना विधिः- गणेश मन्दिर या शिवालय में गणेश चतुर्थी से आरम्भ कर पूर्णिमा तक सवा लाख जप सम्पन्न कर गणेशजी के अनुसार होम क्रिया सम्पन्न करें। त्रिकाल संध्या पंचोपचार

पूजन, स्नान, दान एवं जपादि अनिवार्य है। पूर्णिमा की रात्रि में गण साधक को उसकी योग्यतानुसार प्रत्यक्ष होकर अथवा अदृश्य रूप में आशीर्वाद देता है। जो भी गण सिद्ध होगा वह हमेशा धार्मिक एवं सात्विक कार्यों में ही मनुष्य का साथ देता है। अनुचित कार्य करने से वह स्वयं मनुष्य को रोकता है। गण सिद्धि होने पर स्वयं मनुष्य को गण के अधीन होकर रहना पड़ता है अर्थात् धर्मरूपी जीवन व्यतीत करना पड़ता है। गणसिद्धि पश्चात् इस विषय कौ सदैव गुप्त रखें। सिद्धि पश्चात् मनुष्य को नित्य पूजन में गण की पूजा भी करनी पड़ती है। गणसिद्धि के पश्चात् गणेशजी के प्रति कोई अनुष्ठान या धार्मिक कार्य करना लाभकारी होता है। गण पूजा के साथ नित्य एक माला गणपति गायत्री की अवश्य करें। अन्य आवश्यक विधान गुरुमार्गदर्शन से प्राप्त कर साधनारम्भ करें जिससे कोई हानि न हो और शीघ्र सफलता प्राप्त हो।

साधना मंत्रः- 'ॐ नमो गणेश्वर एकं गणं मम सहायकं कुरु-कुरु पूजोऽहं करिष्ये स्वाहा।'

पूजामंत्रः- 'ॐ नमो गणाय गणेश्वराय च स्वाहा।'

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana